10

प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा सीखने के प्रतिफल

दिनेश कुमार गुप्ता*

भारत विविधताओं का देश है। वर्तमान समय में हमारी कक्षाएँ भी विविध और चुनौतीपूर्ण हैं। कक्षा शिक्षण के दौरान भाषायी और सांस्कृतिक विविधताएँ शिक्षक को अपने शिक्षण में विविधता लाने की चुनौती भी खड़ी करती हैं, पर ये भाषायी, सांस्कृतिक और सामाजिक बहुलताएँ हमारी अनूठी विशेषताएँ हैं। इन विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और समाज से जुड़े मुद्दों को समझने और उनसे संवाद स्थापित कर सकने के रूप में हिंदी भाषा के विकास की जरूरत है। ऐसे भाषा-अध्यापकों को तैयार करना हमारे लिए चुनौती है जो विद्यार्थियों को शिक्षा-प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार के रूप में देखें और उनके सवालों को सुनने और समझने की जरूरतों को समझें। शिक्षा संबंधी सभी दस्तावेज इस ओर इशारा करते हैं कि शिक्षा ऐसी हो कि बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मिलें। भाषा की शिक्षा को समग्रता में देखे समझे बगैर चहुँमुखी विकास संभव नहीं। शिक्षा में भाषा की भूमिका को ठीक से समझने के लिए हमें समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। हमें इसके संरचनागत, सौंदर्यशास्त्रीय, साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्षों को महत्व देते हुए बहुआयामी स्थिति में रखकर इसकी पड़ताल करनी होगी। सामान्यत:भाषा को शब्दकोश व कुछ निश्चित वाक्यगत नियमों के मिश्रण के रूप में देखा जाता है। यह भाषा का एक पहलू है। भाषा का दूसरा और महत्वपूर्ण पहलू वह है जहाँ भाषा बच्चे के व्यक्तित्व को रचने का काम करती है। वास्तव में भाषा शिक्षण पूरी शिक्षा की जमीन तैयार करती है और इस जमीन को सुदृढ़ बनाना भाषा शिक्षण का ही काम है। भाषा की पढ़ाई कैसी हो? इस सवाल को सोचना-विचारना केवल भाषा शिक्षण का सवाल नहीं, बल्कि पूरी शिक्षा का सबसे अहम सवाल होना चाहिए। भाषा-शिक्षा संबंधी अद्यतन दस्तावेज भाषा-शिक्षा में कुछ जरूरी बदलाव की माँग करते हैं। भाषा नियमों द्वारा नियंत्रित संप्रेषण का माध्यम भर नहीं है, बल्कि यह एक परिघटना है, जो बड़े स्तर पर हमारी सोच, सत्ता और समता के संदर्भ में हमारे सामाजिक संबंधों को नियमित करती है। यह लेख हिंदी भाषा सीखने के प्रतिफल की चर्चा करता है।

**प्रवक्ता*, अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गंगापुर सिटी, जिला-सवाई माधोपुर (राजस्थान) 322 201

बच्चे अपने साथ बहुत कुछ लेकर विद्यालय आते हैं— अपनी भाषा, अपने अनुभव और दुनिया को देखने का अपना नजरिया आदि। बच्चे घर-परिवार एवं परिवेश से जिन अनुभवों को लेकर विद्यालय आते हैं, वे बहुत समृद्ध होते हैं। उनकी इस भाषायी पूँजी का इस्तेमाल भाषा सीखने-सिखाने के लिए किया जाना चाहिए। पहली बार विद्यालय में आने वाला बच्चा अनेक शब्दों के अर्थ और उनके प्रभाव से परिचित होता है। लिपिबद्ध (चिह्न और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ बच्चों के लिए अमूर्त होती हैं, इसलिए पढ़ने का प्रारंभ अर्थपूर्ण सामग्री से ही होना चाहिए और किसी उद्देश्य के लिए होना चाहिए। यह उद्देश्य कहानी सुनकर-पढ़कर आनंद लेना भी हो सकता है। धीरे-धीरे बच्चों में भाषा की लिपि से परिचित होने के बाद अपने परिवेश में उपलब्ध लिखित भाषा को पढ़ने-समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होने लगती है। भाषा सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया के मूल में बच्चों के बारे में यह अवधारणा है कि बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। यह निर्माण किसी के सिखाए जाने या जोर-जबरदस्ती से नहीं बल्कि बच्चों के स्वयं के अनुभवों और आवश्यकताओं से होता है, इसलिए बच्चों को ऐसा वातावरण मिलना जरूरी है जहाँ वे बिना रोक-टोक के अपनी उत्सुकता के अनुसार अपने परिवेश की खोज-बीन कर सकें। यही अवधारणा बच्चों की भाषायी क्षमताओं पर भी लागू होती है। विद्यालय में आने पर बच्चे प्रायः स्वयं को बेझिझक अभिव्यक्त करने में असमर्थ पाते हैं, क्योंकि जिस भाषा में वे सहज रूप से अपनी राय, अनुभव, भावनाएँ आदि व्यक्त करना चाहते हैं, वह विद्यालय में प्रायः स्वीकृत नहीं होती। भाषा-शिक्षण को बहुभाषी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता है। कक्षा में बच्चे अलग-अलग भाषायी-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं। कक्षा में इनकी भाषाओं का स्वागत किया जाना चाहिए, क्योंकि बच्चों की भाषा को नकारने का अर्थ है– उनकी अस्मिता को नकारना। प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने के संबंध में यह एक जरूरी बात है कि बच्चे विभिन्न प्रकार के परिचित और अपरिचित संदर्भों के अनुसार भाषा का सही प्रयोग कर सकें। वे सहज, कल्पनाशील, प्रभावशाली और व्यवस्थित ढंग से किस्म-किस्म का लेखन कर सकें। वे भाषा को प्रभावी बनाने के लिए सही शब्दों का प्रयोग कर सकें। यह भी जरूरी है कि पढ़ना, सुनना, लिखना, बोलना— इन चारों प्रक्रियाओं में बच्चे अपने पूर्व-ज्ञान की सहायता से अर्थ की रचना कर पाएँ और कही गई बात के निहितार्थ को भी पकड़ पाएँ। भाषा-संप्राप्ति में पढ़ने को लेकर जिस बात पर बल दिया गया है उसके अनुसार 'पढ़ना' मात्र किताबी कौशल न होकर एक तहजीब और तरकीब है। पढ़ना, पढ़कर समझने और उस पर प्रतिक्रिया करने की एक प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में, हम यह कह सकते हैं कि पढ़ना बुनियादी तौर से एक अर्थवान गतिविधि है। हम ऐसा भी कह सकते हैं कि मुद्रित अथवा लिखित सामग्री से कुछ संदर्भों व अनुमान के आधार पर अर्थ पकड़ने की कोशिश 'पढ़ना' है। ऐसी स्थिति में हम अनेक बार किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान, किसी बिंदु पर जरूरत महसूस होने पर उसी को आगे के संदर्भ में समझने के लिए लौटकर फिर पढ़ते हैं।

पढ़ने का यह दोहराव 'अर्थ की खोज' का प्रमाण बन जाता है। पढ़ने के दौरान अर्थ-निर्माण के लिए इस बात की भी समझ होनी चाहिए कि अर्थ केवल शब्दों और प्रयुक्त वाक्यों में ही निहित नहीं है, बल्कि वह पाठ की समग्रता में भी मौजूद होता है और कई बार उसमें जो साफ तौर पर नहीं कहा गया होता है, उसे भी समझ पाने की जरूरत होती है। यह समझना भी जरूरी है कि पठन सामग्री की अपनी एक अनूठी संरचना होती है और उस संरचना की समझ रखना परिचित अर्थ-निर्माण में सहायक होता है।लिखना एक सार्थक गतिविधि तभी बन पाएगी जब बच्चों को अपनी भाषा, अपनी कल्पना, अपनी दृष्टि से लिखने की आजादी मिले। बच्चों को ऐसे अवसर मिलें कि वे अपनी भाषा और शैली विकसित कर सकें न कि ब्लैकबोर्ड, किताबों या फिर शिक्षक के लिखे हुए की नकल करते रहें। पढ़ना-लिखना सीखने का एकमात्र उद्देश्य यह नहीं है कि बच्चे अपनी पाठ्यपुस्तक को पढ़ना सीख जाएँ और अपनी पाठ्यपुस्तक में आए विभिन्न पाठों के अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिख सकें बल्कि इसका उद्देश्य यह है कि वे अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में पढ़ने-लिखने का इस्तेमाल कर सकें। वे विभिन्न उद्देश्यों के लिए समझ के साथ पढ़ और लिख सकें। पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया में यह बात भी शामिल हो जाए कि विभिन्न उद्देश्यों के लिए पढ़ने और लिखने के तरीकों में अंतर होता है। हमारे पढ़ने का तरीका इस बात पर भी निर्भर करता है कि हमारे पढ़ने का उद्देश्य क्या है? एक विज्ञापन को पढ़ना और एक सूचना को पढ़ने के तरीके में फर्क होता है। लेखन के संदर्भ में भी यह बात महत्वपूर्ण है कि हमारा 'पाठक' कौन है यानी हम किसके लिए लिख रहे हैं, अगर हमें विद्यालय के खेलकूद समारोह की सूचना लिखकर लगानी है तो इसके 'पाठक' विद्यालय के बच्चे, शिक्षक और अन्य कर्मचारीगण हैं। लेकिन अगर यही सूचना समुदाय और अभिभावकों को देनी है तो इसके पाठकों में अभिभावक और समुदाय के व्यक्ति भी शामिल हो जाएँगे। दोनों स्थितियों में हमारे लिखने के तरीके और भाषा में बदलाव आना स्वाभाविक है। इसी तरह से तरह-तरह की सामग्री को पढ़ने का उद्देश्य पढ़ने के तरीके को निर्धारित करता है। अगर आप स्कूल के नोटिस बोर्ड पर विद्यालय-वार्षिकोत्सव की सूचना पढ़ना चाहते हैं तो इसमें आपका ध्यान किन्हीं खास बिंदुओं की ओर जाएगा, जैसे— समारोह कौन-सी तारीख को है, समारोह कहाँ आयोजित किया जाएगा, समय क्या है? यदि कोई कहानी पढ़ते हैं तो उसके पात्रों और घटनाक्रम के बारे में गहराई से सोचते हैं कि यदि ऐसा हुआ तो क्यों हुआ, कहानी में ऐसा क्या है, जो अगर नहीं होता तो कहानी का रुख क्या होता? हमारे पढ़ने-लिखने के अनेक आयाम हैं, अनेक पड़ाव हैं और हर पड़ाव अपने आप में महत्वपूर्ण है– इन्हें कक्षा में समुचित स्थान मिलना चाहिए।

प्राथमिक स्तर पर भी बच्चों से यह अपेक्षा रहती है कि वे कही या लिखी गई बात पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें और प्रश्न पूछ सकें। बच्चों की भाषा इस बात का प्रमाण है कि वे अपनी भाषा का व्याकरण अच्छी तरह जानते हैं। पर व्याकरण की सचेत समझ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को उसके विभिन्न पहलुओं की पहचान

विविध पाठों के संदर्भ में और आसपास के परिवेश से जोड़कर कराई जाए। भाषा के अलग-अलग तरह के प्रयोगों की ओर उनका ध्यान दिलाया जाए, ताकि वे भाषा की बारीकियों को पकड़ सकें और अपनी भाषा में उनका उचित रूप से प्रयोग कर सकें। भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और माहौल के संदर्भ में यह बात ध्यान में रखना जरूरी है कि एक स्तर पर की जाने वाली प्रक्रियाओं को अगले स्तर की कक्षाओं के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। कक्षावार या स्तरानुसार रोचक विषय-सामग्री का चयन किया जाना चाहिए जिससे बच्चों को हिंदी भाषा की विभिन्न शैलियों और रंगतों से परिचित होने और उनका प्रभावी प्रयोग करने के अवसर मिल सकें। रोचक और विविधतापूर्ण बाल साहित्य का इस संदर्भ में विशेष महत्व है। भाषा संबंधी सभी क्षमताएँ, जैसे— सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना एक-दूसरे से जुड़ी हुई होती हैं और एक-दूसरे के विकास में सहायक होती हैं। अतः इन्हें अलग-अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए। यहाँ यह समझना भी जरूरी होगा कि हिंदी भाषा संबंधी जो भाषा-संप्राप्ति के बिंदु दिए गए, है उनमें परस्पर जुड़ाव है और एक से अधिक भाषायी क्षमताओं की झलक उनमें मिलती है। किसी रचना को सुनकर अथवा पढ़कर उस पर गहन चर्चा करना, अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना, प्रश्न पूछना, पढ़ने की क्षमता से भी जुड़ा है और सुनने-बोलने की क्षमता से भी। प्रतिक्रिया, प्रश्न और टिप्पणी को लिखकर भी अभिव्यक्त किया जा सकता है। इस तरह से भाषा की कक्षा में एक साथ सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना जुड़ा है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए यहाँ पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाएँ, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया तथा सीखने संबंधी संप्राप्ति को दर्शाने वाले बिंदु दिए गए हैं। पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करने में सीखने संबंधी प्रक्रियाओं की बड़ी भूमिका होगी। सीखने की उपयुक्त प्रक्रियाओं के बिना सीखने संबंधी अपेक्षित संप्राप्ति नहीं की जा सकेगी।

पाठ्यचर्या-संबंधी अपेक्षाएँ

पाठ्यचर्या-संबंधी अपेक्षाओं को पूरे देश के बच्चों को ध्यान में रखकर (प्रथम भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले और द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले, दोनों) तैयार किया गया है। कक्षा एक से पाँच तक—

- दूसरों की बातों को रुचि के साथ और ध्यान से सुनना। अपने अनभुव-संसार और कल्पना-संसार को बेझिझक और सहज ढंग से अभिव्यक्त करना। अलग-अलग संदर्भों में अपनी बात कहने की कोशिश करना (बोलकर/ इशारों से/'साइन लैंग्वेज' द्वारा/चित्र बनाकर)।
- स्तरानुसार कहानी, कविता आदि को सुनने में रुचि लेना और उन्हें मजे से सुनना और सुनाना। देखी, सुनी और पढ़ी गई बातों को अपनी भाषा में कहना, उसके बारे में विचार करना और अपनी प्रतिक्रिया/टिप्पणी (मौखिक और लिखित रूप से) व्यक्त करना।
- सुनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं को समझकर उन्हें अपने अनभुवों से जोड़ पाना तथा उन्हें अपने शब्दों में कहना और लिखना। स्तरानुसार कहानी, कविता या अनभुव के स्तर पर किसी स्थिति का निष्कर्ष या उपाय निकालना।

- लिपि-चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर और समझकर उनमें सह-संबंध बनाते हुए लिखने का प्रयास करना। चित्र और संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाते हुए पढ़ना।
- पढ़ने की प्रक्रिया को दैनिक जीवन की (स्कूल और बाहर की) जरूरतों से जोड़ना, जैसे— कक्षा और स्कूल में अपना नाम, पाठ्यपुस्तक का नाम और अपनी मनपसंद पाठ्यसामग्री पढ़ना।
- सुनी और पढ़ी गई बातों को समझकर अपने शब्दों में कहना और लिखना। चित्रों को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना।
- पुस्तकालय और विभिन्न स्रोतों (रीडिंग कॉर्नर, पोस्टर, तरह-तरह की चीजों के रैपर, बाल पत्रिकाएँ, साइन लैंग्वेज, ब्रेल लिपि आदि) से अपनी पसंद की किताबें/सामग्री ढूँढ़कर पढ़ना। अलग-अलग विषयों पर और अलग-अलग उद्देश्यों के लिए लिखना। अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि लिखना।
- मुख्य बिंदु/विचार को ढूँढ़ने के लिए विषय-सामग्री की बारीकी से जाँच करना। विषय-सामग्री के माध्यम से संदर्भ के अनुसार नए शब्दों का अर्थ जानना।
- मनपसंद विषय का चुनाव करके लिखना। विभिन्न विराम-चिह्नों का समझ के साथ प्रयोग करना।
- संदर्भ और लिखने के उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त भाषा (शब्दों, वाक्यों आदि) का चयन और प्रयोग करना। नए शब्दों को चित्र-शब्दकोश/शब्दकोश में देखना।
- भाषा की लय और तुक की समझ होना तथा उसका प्रयोग करना। घर और विद्यालय की भाषा के बीच संबंध बनाना।

कक्षा तीन (हिंदी) सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

- सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातचीत करने की भरपूर आजादी और अवसर हों। हिंदी में सुनी गई बात, कविता, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने-सुनने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने, प्रतिक्रिया देने के अवसर उपलब्ध हों।
- बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजदू हैं या जिन भाषाओं के बच्चे कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों। इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और उनके शब्द-भंडार, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर मिल सकेंगे।
- 'पढ़ने का कोना'/पुस्तकालय में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की रोचक सामग्री, जैसे— बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो-वीडियो सामग्री उपलब्ध हो। तरह-तरह की कहानियों, कविताओं, पोस्टर आदि को चित्रों और संदर्भ के आधार पर समझने-समझाने के अवसर उपलब्ध हों।
- विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे— किसी कहानी

में किसी जानकारी को खोजना, किसी जानकारी को निकाल पाना, किसी घटना या पात्र के संबंध में तर्क, अपनी राय दे पाना आदि।

- सुनी, देखी बातों को अपने तरीके से, अपनी भाषा में लिखने के अवसर हों। अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों।
- संदर्भ और उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त शब्दों और वाक्यों का चयन करने, उनकी संरचना करने के अवसर उपलब्ध हों। अपना परिवार, विद्यालय, मोहल्ला, खेल का मैदान, गाँव की चौपाल जैसे विषयों पर अथवा स्वयं विषय का चुनाव कर अनुभवों को लिखकर एक-दूसरे से बाँटने के अवसर हों।
- एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उन पर अपनी राय देने, उनमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से लिखने के अवसर हों।

सीखने के प्रतिफल

- बच्चे कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से समझते हुए सुनते और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। कहानी, कविता आदि को उपयुक्त उतार-चढ़ाव, गति, प्रवाह और सही पुट के साथ सुनाते हैं। सुनी हुई रचनाओं की विषयवस्तु, घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, राय बताते हैं/अपने तरीके से (कहानी, कविता आदि) अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं।
- आसपास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं और विभिन्न स्थितियों में हुए अपने अनुभवों के बारे में बताते, बातचीत करते और प्रश्न पूछते हैं। कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को समझते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं। अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर, पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं, शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक, सांकेतिक) देते हैं।
- अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ सुनिश्चित करते हैं। तरह-तरह की कहानियों, कविताओं/रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे— शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विभिन्न विराम-चिह्नों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग करते हैं।
- स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व-नियंत्रित लेखन (कन्वेंशनल राइटिंग) करते हैं।
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में शब्दों के चुनाव, वाक्य संरचना और लेखन के स्वरूप (जैसे— दोस्त को पत्र लिखना, पत्रिका के संपादक को पत्र लिखना) को लेकर निर्णय लेते हुए लिखते हैं।
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे— पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।

- अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (लिखित/ब्रेल लिपि आदि में) देते हैं।

कक्षा चार (हिंदी) सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

- सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं, अनभुवों, कहानियों, कविताओं आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने-सुनाने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों।
- 'पढ़ने का कोना'/पुस्तकालय में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की रोचक सामग्री, जैसे— बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो-वीडियो सामग्री, अखबार आदि उपलब्ध हों। तरह-तरह की कहानियों, कविताओं, पोस्टर आदि को पढ़कर समझने-समझाने, उस पर अपनी प्रतिक्रिया देने, बातचीत करने, प्रश्न करने के अवसर उपलब्ध हों।
- विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे— किसी घटना या पात्र के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया, राय, तर्क देना, विश्लेषण करना आदि। कहानी, कविता आदि को बोलकर पढ़ने-सुनाने और सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपने तरीके से, अपनी भाषा में कहने और लिखने (भाषिक और सांकेतिक माध्यम से) के अवसर एवं प्रोत्साहन उपलब्ध हों।
- जरूरत और संदर्भ के अनुसार अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द, वाक्य, अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर उपलब्ध हों। एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय देने, उसमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से लिखने के अवसर हों।
- अपनी बात को अपने ढंग से/सृजनात्मक तरीके से अभिव्यक्त (मौखिक, लिखित, सांकेतिक रूप से) करने की आजादी हो। आसपास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं (जैसे— मेरे घर की छत से सूरज क्यों नहीं दिखता? सामने वाले पेड़ पर बैठने वाली चिड़िया कहाँ चली गई?) को लेकर प्रश्न करने, सहपाठियों से बातचीत या चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।
- कक्षा में अपने साथियों की भाषाओं पर गौर करने के अवसर हों, जैसे— आम, रोटी, तोता आदि शब्दों को अपनी-अपनी भाषा में कहे जाने के अवसर उपलब्ध हों। विषयवस्तु के संदर्भ में भाषा की बारीकियों और उसकी नियमबद्ध प्रकृति को समझने और उनका प्रयोग करने के अवसर हों।
- अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे— गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार इस्तेमाल करने के अवसर हों। पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील

बिंदुओं को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।

सीखने के प्रतिफल

- बच्चे दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते और प्रश्न पूछते हैं। सुनी रचनाओं की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं। कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं। भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते और उसका इस्तेमाल करते हैं।
- विविध प्रकार की सामग्री (जैसे— समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका आदि) में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील बिंदुओं को समझते और उन पर चर्चा करते हैं। पढ़ी हुई सामग्री और निजी अनभुवों को जोड़ते हुए उनसे उभरी संवेदनाओं और विचारों की (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं।
- अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (बाल अखबार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ते हैं। अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ ग्रहण करते हैं।
- पढ़ने के प्रति उत्सुक रहते हैं और पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ते हैं। पढ़ी रचनाओं की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं। स्तरानुसार अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे— गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली की सराहना करते हैं।
- भाषा की बारीकियों, जैसे— शब्दों की पुनरावृत्ति, सर्वनाम, विशेषण, जेंडर, वचन आदि के प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं। किसी विषय पर लिखते हुए शब्दों के बारीक अंतर को समझते हुए सराहते हैं और शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए लिखते हैं। विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (बुलेटिन बोर्ड पर लगाई जाने वाली सूचना, सामान की सूची, कविता, कहानी, चिट्ठी आदि) के अनुसार लिखते हैं।
- स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं। अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं।
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे— पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं। अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्णन आदि लिखते हुए भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं।

कक्षा पाँच (हिंदी) सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

- सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं, अनभुवों, कहानियों, कविताओं आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में (मौखिक/लिखित/सांकेतिक रूप से) कहने-सुनाने/प्रश्न पूछने, टिप्पणी करने, अपनी राय देने की आजादी हो।
- पुस्तकालय/कक्षा में अलग-अलग तरह की कहानियाँ, कविताएँ अथवा बाल साहित्य, स्तरानुसार सामग्री, साइनबोर्ड, होर्डिंग, अखबारों की कतरने उनके आसपास के परिवेश में उपलब्ध हों और उन पर चर्चा करने के मौके हों।
- तरह-तरह की कहानी, कविताओं, पोस्टर आदि को संदर्भ के अनुसार पढ़कर समझने-समझाने के अवसर उपलब्ध हों। सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपने तरीके से, अपनी भाषा में लिखने के अवसर हों। जरूरत और संदर्भ के अनुसार अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों।
- एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय देने, उसमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से लिखने के अवसर हों। आसपास होने वाली गतिविधियों/घटने वाली घटनाओं को लेकर प्रश्न करने, बच्चों से बातचीत या चर्चा करने, टिप्पणी करने, राय देने के अवसर उपलब्ध हों। विषयवस्तु के संदर्भ में भाषा की बारीकियों और उसकी नियमबद्ध प्रकृति को समझने और उनका प्रयोग करने के अवसर हों।
- नए शब्दों को शब्दकोश/चित्र शब्दकोश में देखने के अवसर उपलब्ध हों। अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे— गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार इस्तेमाल करने के अवसर हों। पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील मुद्दों को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।

सीखने के प्रतिफल

- बच्चे सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि) की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं/अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं/अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं।
- अपने आसपास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर मौखिक रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं। भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी (मौखिक) भाषा गढ़ते हैं।
- विविध प्रकार की सामग्री (अखबार, बाल साहित्य, पोस्टर आदि) में आए संवेदनशील बिंदुओं पर (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं, जैसे— 'ईदगाह' कहानी पढ़ने के बाद बच्चा

कहता है— "मैं भी अपनी दादी की खाना बनाने में मदद करता हूँ"।

- विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (बुलेटिन पर लगाई जाने वाली सूचना, कार्यक्रम की रिपोर्ट, जानकारी आदि प्राप्त करने के लिए) के लिए पढ़ते और लिखते हैं।
- अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझते हुए पढ़ते और उसके बारे में बताते हैं। सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि) की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं/अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं/अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं।
- अपरिचित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजते हैं। स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं, जैसे— किसी घटना की जानकारी के बारे में बताने के लिए स्कूल की भित्ति पत्रिका के लिए लिखना और किसी दोस्त को पत्र लिखना।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते हैं और उसे अपने लेखन/ब्रेल में शामिल करते हैं।

भाषा की व्याकरणिक इकाइयों (जैसे— कारक-चिह्न, क्रिया, काल, विलोम आदि) की पहचान करते हैं और उनके प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं। विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों , जैसे— पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न, उद्धरण चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।

- स्तरानुसार अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे— गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझते हैं और संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं। अपने आसपास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर लिखित रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- उद्देश्य और संदर्भ के अनुसार शब्दों, वाक्यों, विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग करते हुए लिखते हैं। पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए संवेदनशील बिंदुओं पर लिखित/ब्रेल लिपि में अभिव्यक्ति करते हैं। अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं। कविता, कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं।

भाषा और समाज

हम जानते हैं कि बच्चे तीन वर्ष से पहले ही भाषा की मूल संरचना से अच्छी तरह परिचित हो जाते हैं और बात संप्रेषित कर सकते हैं। तीन साल के बच्चे के संज्ञान के दायरे में आने वाले किसी भी विषय पर उससे बातचीत की जा सकती है। चाम्सकी ने कहा है कि एक बच्चा अंतर्निहित भाषायी क्षमता के साथ जन्म लेता है। यह बात आज भाषाविदों के लिए एक पहेली बनी हुई है कि इतना छोटा बच्चा कैसे, जटिल भाषिक तंत्र का विकास कर लेता है, लेकिन इस बात से यह महत्वपूर्ण पहलू सामने आता है कि पर्याप्त

अवसर और माहौल मिले तो बच्चे आसानी से भाषा सीख लेते हैं। भाषा किस प्रकार हमारे व्यक्तित्व, हमारी सोच और हमारे पूरे जीवन को प्रभावित करती है, इसे समझने के लिए इस कहानी को समझने की कोशिश करते हैं— यह कहानी भारत के दो परिवारों की है। एक परिवार दिल्ली में रहता है और उसके व्यवहार की भाषा अंग्रेजी है। दूसरा परिवार झारखंड के छोटानागपुर में रहता है और उसके व्यवहार की भाषा मुंडारी है। दोनों परिवारों में बच्चे का जन्म होता है। एक के कानों में दिन-रात अंग्रेजी भाषा के शब्द और उसकी वाक्य रचना गूँजती रहती है। दूसरे बच्चे को हमेशा मुंडारी के शब्द सुनाई पड़ते रहते हैं। धीरे-धीरे बच्चे बड़े होते हैं। मुंडारी परिवार का बच्चा एक साल की उम्र से ही खेतों, जंगलों और नदियों की यात्रा करने लगता है और उससे संबंधित शब्दावली से परिचित होने लगता है, दूसरी ओर अंग्रेजी भाषी परिवार के बच्चे का कार्टून चैनल, तरह-तरह के खिलौने, टी.वी., टैबलेट, लैपटॉप आदि के माध्यम से एक अलग संसार से परिचय होता जाता है। मुंडारी भाषी बच्चे को भाषा का केवल मौखिक रूप सुनाई देता है, कभी-कभार बिस्किट या किसी सामान के पैकेट के रूप में या किसी कैलेंडर के रूप में छपी सामग्री देखने को मिल जाती है, जबकि अंग्रेजी भाषी बच्चे के चारों ओर सामानों के रैपर, पोस्टर, अखबार, पत्रिका, किताब, खिलौने, टी.वी. आदि के रूप में लिखित भाषा का एक भरा-पूरा संसार हर समय मौजूद रहता है। दोनों बच्चे चंचल प्रकृति के हैं और नई बातों को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं और खूब सवाल पूछते रहते हैं। अंग्रेजी भाषी बच्चा तीन साल का होते-होते एक विद्यालय में जाने लगता है जहाँ उसे शिक्षिका तरह-तरह के शैक्षिक खिलौनों, रंग, कागज आदि से जोड़ती हैं। मुंडारी भाषी बच्चा भी तरह-तरह के पेड़-पौधों, छोटे-बड़े जंतुओं और उनकी प्रकृति को जानने लगता है। कौन-सी बकरी सींग मारती है और कौन-सी बकरी दूध पिलाती है, इसे वह अच्छी तरह जानता है। वह यह भी जानता है कि एक पेड़ से गिरने वाले लाल रंग के फल को खाना चाहिए और दूसरे पेड़ के लाल वाले फल को छूना भी नहीं चाहिए। कुछ सालों बाद अंग्रेजी भाषी बच्चा बड़े स्कूल में जाता है, उसे उसी भाषा की किताबें मिलती हैं जिसको वह बचपन से सुनता-पढ़ता आया है। उसमें लिखी बहुत सारी बातों को वह पहले से ही जानता है, जैसे कि पेंग्विन के बारे में, अमेरिका के बारे में, कंप्यूटर के बारे में और विज्ञान के तरह-तरह के खेलों के बारे में। स्कूल में उसे वैसी ही बातें करनी होती है जैसी कि वह घर में किया करता था।

छह साल की उम्र में मुंडारी भाषी बच्चा भी स्कूल जाता है जहाँ शिक्षक हिंदी भाषा में पढ़ाते हैं, परंतु उसे कुछ समझ में नहीं आता है, गुरुजी उसे अ, आ... क, ख, ग, घ... लिखा एक चार्ट पकड़ाते हैं जिसे वह पहली बार देखता है। यही नहीं वे उसे नमस्कार न करने के लिए डाँटते हैं जिसे वह पहली बार सुनता है, वह 'जोहार' जानता है, परंतु यह नहीं जानता कि नमस्कार क्या होता है। उसे स्कूल की दुनिया बिलकुल अलग नजर आती है जिसका उसके घर और जंगल से कोई संबंध नहीं जुड़ पाता। उसे यहाँ की भाषा और यहाँ की बातें सब कुछ बेगानी लगती हैं। माता-पिता की डाँट और दबाव के कारण वह

स्कूल तो पहुँचता है, परंतु उसे मजा नहीं आता। वह तेज गति से पेड़ पर चढ़ जाता है, चपलता के साथ पानी में डुबकी मारकर हाथों से मछली पकड़ लेता है, परंतु स्कूल में उसकी सारी तेजी गायब हो जाती है। अंग्रेजी भाषी बच्चे को स्कूल में वही भाषा और वही विषय मिलते हैं जिनको वह बचपन से सीखता आया है, परंतु मुंडारी परिवार के बच्चे को केवल भाषा ही नहीं, विषय और उसके बिलकुल नए संदर्भों से भी जूझना पड़ता है। जैसे— तैसे मुंडारी बच्चा छठी कक्षा में पहुँच जाता है। यहाँ एक नई मुसीबत शुरू होती है, उसे अंग्रेजी पढ़ने को कहा जाता है जो एकदम से अलग तरह की भाषा है। कुछ समय बाद वह राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में बैठता है जिसके सवाल बिलकुल अलग तरह के होते हैं, जिनका उसके बचपन के ज्ञान से, उसके परिवेश से कोई संबंध नहीं जुड़ता परंतु अंग्रेजी भाषी बच्चे को वह बहुत सहज लगता है, क्योंकि ज्यादातर बातें वह स्कूल और घर में जान चुका होता है। अंग्रेजी भाषी बच्चे को सब कुछ अंग्रेजी में मिलता जाता है, जबकि मुंडारी भाषी बच्चा जिसने सबकुछ मुंडारी भाषा में सीखा है उसे पहले अलग तरह की हिंदी और फिर ऐसी अंग्रेजी सीखने में बहुत ऊर्जा लगानी पड़ती है जिसका संबंध उसके पहले के ज्ञान से नहीं जुड़ता। वह नए विषयों और नई संकल्पनाओं को समझने में सिर्फ भाषा के कारण असमर्थ हो जाता है। धीरे-धीरे स्थिति यह बनती है कि एक बच्चा तीव्र बुद्धिवाला प्रतिभाशाली और टॉपर कहलाता है और दूसरे बच्चे को मंदबुद्धि, लापरवाह और कुतर्की की उपाधि मिलती है। यह कहानी और आगे बढ़ सकती है जिसमें बड़ा होने के बाद वह व्यक्ति बहुत समझदार, विशिष्ट, देश-दुनिया की बातों का जानकार आदि-आदि कहा जाएगा, जबकि दूसरे के बारे में कहा जाएगा कि वह तो एक सामान्य व्यक्ति है और उसे कुछ नहीं आता। यह कहानी इस बात को पुष्ट करती है कि भाषा समाज में धीरे-धीरे कई तरह के अंतर पैदा करने का माध्यम बन जाती है, यह अंतर कभी वर्गभेद तो कभी अस्मिता या जेंडर भेद के रूप में दिखाई देता है।

निष्कर्ष

भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का ही माध्यम नहीं है, बल्कि हमारा पूरा जीवन भाषा से तय होता है। 4–5 वर्ष की उम्र तक एक बच्चा करीब 50,000 घंटे से ज्यादा एक भाषा के माध्यम से संकल्पना विकसित करने पर खर्च कर चुका होता है। बाद में वह चाहे जितनी भाषा सीख ले, परंतु किसी भाषा का व्यावहारिक उपयोग करना और उसमें सोचने और कल्पना करने की क्षमता विकसित करना दो अलग बातें हैं। शुरू की शिक्षा वास्तव में भाषा शिक्षा ही होती है। एक व्यक्ति का पूरा परिवेश (सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक) भाषा से तय होता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि हर समाज की एक संरचना होती है जिसमें कोई ज्ञानी-अज्ञानी, बड़ा-छोटा, प्रभावी-अप्रभावी, स्त्री-पुरुष आदि बनता है। उसका यह बनना सामाजिक संरचना और उसके भीतर निहित सत्ता संबंध से तय होता है, जिसका सबसे बड़ा हिस्सा भाषा निर्मित करती है। यानी किसी एक भाषा के परिवेश में जाना किसी समाज की सत्ता-संरचना में अपनी भूमिका को तय कर लेना भी है। जिस समूह के

पास राजनीतिक-आर्थिक शक्ति होती है उसकी भाषा प्रभावी हो जाती है और वह सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों (विद्वता के स्तर, परीक्षा प्रणाली, सभ्यता आदि) को भी अपनी भाषा के अनुसार परिभाषित करता है। कहने को हम समाज को वर्ग, जाति, जेंडर आदि के आधार पर विभाजित करते हैं, परंतु जो चीज सबसे ज्यादा अंतर पैदा करती है, वह भाषा है। इसलिए भाषा और समाज के रिश्ते को समझना ज्यादा जरूरी है।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2017. *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल*. पृ. 2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2017. *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल*. पृ. 3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2017. *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल*. पृ. 4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2017. *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल*. पृ. 10. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2017. *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल*. पृ. 12. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2017. *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल*. पृ. 14. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2018. *भाषा शिक्षण-हिंदी भाग 1*. पृ. 3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2018. *भाषा शिक्षण-हिंदी भाग 1*. पृ. 5. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.